

जीवन-कौशल - Life Skills

परिभाषा -

1- विश्व स्वास्थ्य संगठन / W.H.O ⇒

जीवन कौशल अनुकूलित या सकारात्मक व्यवहार की वह क्षमताएँ हैं, जो एक व्यक्ति को अपने जीवन की माँगों को स्वयं चुनौतियाँ से निपटने में सहायता करती हैं।

2- यूनीसेफ =

जीवन कौशल बढ़ किया है जिसके द्वारा एक

व्यक्ति व्यवहार परिवर्तन या व्यवहारगत विकास के द्वारा अपने जीवन के तीन क्षेत्रों - ज्ञान, अभिवृत्त एवं कौशल में संतुलन स्थापित करता है।

जीवन कौशल के प्रकार =

* W.H.O - ने जीवन कौशल के 10 प्रकार बताए हैं जिन्हें एक-एक करके पढ़ेंगे -

1- समानभूति / Empathy =

युद्ध को दूसरे की जगह रखकर यह सोचना कि अगर आप उसकी जगह होते तो क्या करते!

2- समस्या समाधान =

- ✓ 1. Imp
- i) समस्या की पूरी जानकारी
 - ii) 'समस्या से जुड़े आँकड़े'
 - iii) सम्भावित समाधान
 - iv) किसी एक समाधान या विकल्प का परीक्षण
 - v) प्राप्त परिणाम की व्याख्या
 - vi) निष्कर्ष निकालना

3- निर्णय लेना :-

- * निर्णय लेने के लिए मौजूद संसाधन
- * निर्णय लेने के लिए मौजूद विकल्प
- * निर्णय से प्रभावित होने वाले लोग
- * निर्णय से होने वाला सम्भावित फायदा या नुकसान

4- समालोचनात्मक सोच :-

- * गुण-दोष दोनों पर विचार रखना
- * निष्पक्ष सोच रखना
- * निर्णय आदि के दौरान केवल निष्पी शय को वरीयता न देना
- * अत्याधिक ज्यादा भावुक न होना
- * समदर्शी या झुले विचारों वाला होना

5- सचनात्मक सोच :-

- * किसी नये विचार का प्रतिपादन
- * किसी नयी वस्तु का आविष्कार
- * किसी कार्य को करने का तरीका ढूँढना
- * किसी भावाचार को बढ़ाना
- * या सदिवादी विचार को तोड़कर कुछ अलग करना

6- तनाव का प्रबन्धन :-

- * नियमित व्यायाम करे
- * सकारात्मक सोच रखे
- * खुश और संतुष्ट रहे
- * समायोजन करे
- * जीवन में लक्ष्य, महत्वाकांक्षी या जिद में अंतर समझे

7- भावुकता पर नियन्त्रण = Emotional Balance

- * अत्यन्त क्रोध या दया दोनों ही अच्छे नहीं हैं
- * जीवन के महत्वपूर्ण निर्णयों में भावुकता का परिचय न दे बल्कि वास्तविकता को वरीयता दे-
- * बिजनेस परिवार या रिश्तों में भावुकता को चरम पर न ले जाए

8- स्वजागरूकता =

- * खुद को पहचानना
- * अपनी जिम्मेदारियों को समझना
- * अपनी मजबूत एवं कमजोर पक्षों का जानना
- * अपनी पारिवारिक, सामाजिक, व्यावसायिक भूमिका का भलीभांति निर्वाह करना

9- संबंधों का प्रबंधन =

- * रिश्तों को जैसे-जैसे ना तुलना कर
- * रिश्तों पर हानि न हो
- * रिश्तों का वरीयता दे
- * सामाजिक, पारिवारिक, मानसिक सभी प्रकार के रिश्तों में संतुलन बनाएँ।

10- उचित सम्प्रेषण =

- * सही व्यक्ति का चयन
- * सही माध्यम का चयन
- * सही भाषा का चयन
- * सामने वाले व्यक्ति की मानसिक एवं सांस्कृतिक जानकारी

शिक्षक की भूमिका

कौठारी आयोग (1964-66) ने कहा था कि राष्ट्र निर्माण में शिक्षको से बड़ी भूमिका और किसी की नहीं हो सकती है इस कथन को ध्यान में रखते हुए, तथा NCF-2005 को भी ध्यान में रखते हुए शिक्षको की भूमिका पर विचार करना महत्वपूर्ण हो जाता है। इस अध्याय में हम शिक्षको की भूमिका जानेंगे।

शिक्षको के प्रकार

शिक्षण कला की दृष्टि से शिक्षको तीन प्रकार होते हैं-

1- तानाशाही / सन्तावादी / निरंकुश शिक्षक - इस प्रकार के शिक्षक में विद्यार्थियों के प्रति सहानुभूति या क्षमानुभूति नहीं होती है कहा में सिर्फ शिक्षक ही होनी और सर्वे सर्वा होता है।

2- प्रजातान्त्रिक / लोकतान्त्रिक / बालकेन्द्रित शिक्षक - इस प्रकार

के शिक्षण में शिक्षक विद्यार्थियों की रुचि, पूर्वज्ञान, संवत्समता को वरीयता देते हुए लोकतान्त्रिक माहौल में काम करता है।

3- अट्रस्टेड पी शिक्षण = इस प्रकार के शिक्षक का विद्यार्थियों पर कोई नियन्त्रण नहीं होता। अर्थात् विद्यार्थी सर्वेसर्वा होता है।

* NCF-2005 ने शिक्षक की निम्नलिखित 5 भूमिकाएँ प्रामाणिक हैं।

- 1- सुविधा प्रदाता - Facilitator
- 2- मार्गदर्शक - Guide
- 3- परामर्शदाता
- 4- नेतृत्वकर्ता - Leader
- 5- अनुभवणकर्ता Monitor

बालकेंद्रित

शिक्षक एक सुविधा प्रदाता के रूप में -

* बुद्धि-संलग्न प्रयास द्वारा सीखने की सुविधा = शिक्षक जानता है कि अधिगम के शुरुआत में सभी बुद्धि करते हैं। इसलिए वह अपने विद्यार्थियों से सम्पूर्णता की उम्मीद न करते हुए बुद्धि-संलग्न प्रयास द्वारा सीखने की सुविधा देता है। अतः वह सुविधा प्रदाता है।

* भ्रम दूर करने की सुविधा = विद्यार्थी अधिगम के दौरान भ्रमित हो जाते हैं, शिक्षक अपने ज्ञान से उन्हें भ्रम दूर करने की सुविधा देता है अतः वह सुविधा प्रदाता है।

* समूह वार्तालाप की सुविधा :- शिक्षक विद्यार्थियों को दोटे-2 समूहों में बाँटकर आपसी वार्तालाप द्वारा सीखने की सुविधा देता है। अतः शिक्षक सुविधा प्रदाता है।

- * जिज्ञासा शान्त करने की सुविधा
- * पूर्वज्ञान से जोड़कर नवीन ज्ञान निर्माण की सुविधा
- * संप्रेषण की सुविधा
- * आत्म प्रकटीकरण की सुविधा
- * सलाह की सुविधा
- * सही रास्ता दिखाने की सुविधा
- * करके सीखने की सुविधा
- * मंच देखने की सुविधा

शिक्षक एक नेतृत्वकर्ता

NCF 2005 शिक्षक को बच्चों का मुखिया या नेतृत्वकर्ता मानता है। इस भाग हम कुछ बिंदुओं के सहारे यह सिद्ध करने की कोशिश करेंगे कि शिक्षक वास्तव में एक नेतृत्वकर्ता है।

लेकिन इससे पहले हम नेतृत्व के प्रकार को जानने की कोशिश करेंगे।

→ विद्वानों ने नेतृत्व के तीन प्रकार माने हैं -

1- तानाशाही / निरंकुशवादी / सन्तावादी या शिक्षक केन्द्रित नेतृत्व :-

इस प्रकार के नेतृत्व में अधिकार सिर्फ नेता के पास होते हैं और वह शिक्षा में तानाशाही शिक्षक के बराबर प होता है। तथा कक्षा में सिर्फ वही हावी होता है। और

विद्यार्थी की भागीदारी लगभग शून्य होती है।

2- प्रजातान्त्रिक / बालकेन्द्रित नेतृत्व :- इस प्रकार के नेतृत्व में नेतृत्वकर्ता भी समूह के लोगों के बराबर भी होता है और नेतृत्व वह अकेले ही नहीं अपितु समूह के लोगों के हित को ध्यान में रखते हुए सभी की राय एक सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करते हुए कार्य करता है।

3- अहस्तक्षेपी नेतृत्व :- इस प्रकार के नेतृत्व में नेता न तो पूरी तरह से तानाशाह होता है, और न ही पूरी तरह से प्रजातान्त्रिक होता है, बल्कि वह अपने कार्य को एक आम सहमति बन जाने के बाद बिना अहस्तक्षेप के अंजाम देता है। वास्तव में आजकल इस प्रकार का नेतृत्व कंपनियों एवं कॉर्पोरेट जगत में ही दिखाई देता है।

हम समझ गये हैं कि सबसे बेहतर नेतृत्व प्रजातान्त्रिक या बालकेन्द्रित नेतृत्व ही होता है और हम शिक्षक के नेतृत्व शैली में इन्हीं प्रजातान्त्रिक गुणों को तलाश करेंगे

शिक्षक के नेतृत्वकर्ता के रूप में प्रमुख प्रमाण :-

- 1- बच्चों का मुखिया
- 2- असफलता की जिम्मेदारी लेने वाला
- 3- पहल करने वाला
- 4- सलाह देने वाला
- 5- राह दिखाने वाला
- 6- अनुभवशील
- 7- सुविद्यार देने वाला
- 8- प्रजातान्त्रिक दृष्टिकोण वाला

9- सभी बच्चों की राय सुनने वाला

शिक्षक एक मार्गदर्शक के रूप में

सदियों से शिक्षकों को इस देश में एक सम्मानजनक स्थान प्राप्त है। क्योंकि शिक्षकों को आने वाली पीढ़ी का मार्गदर्शक माना गया है। NCF 2005 में भी शिक्षकों को मार्गदर्शक माना गया है आज हम कुछ बिन्दुओं के सहारे उसे सिद्ध करने का प्रयास करेंगे।

प्रमुख बिन्दु :-

- 1- विशेषज्ञता
- 2- अनुभव
- 3- मार्ग का ज्ञाता
- 4- विद्यार्थी का अनुभव
- 5- प्रेरक
- 6- पहचानकर्ता
- 7- सुविधा प्रदाता
- 8- परामर्श दाता

शिक्षक एक परामर्श दाता :-

परामर्श :- एक व्यक्ति की माँग पर दूसरे अनुभवी व्यक्ति द्वारा जरूरतमंद व्यक्ति को उचित सलाह देने की परामर्श है।

परामर्श के मुख्यतः दो प्रकार हैं -

- 1- सामूहिक परामर्श - जैसे पूरी कक्षा को परामर्श देना
- 2- व्यक्तिगत परामर्श - किसी एक विद्यार्थी को शिक्षा से जुड़ी समस्या पर परामर्श देना। 5-

शिक्षक एक परामर्शदाता =

- 1- छात्रों का हितैषी
- 2- गोपनीयता रखने वाला
- 3- निस्वार्थ बिना किसी पूर्वाग्रह के सलाह देने वाला
- 4- विद्यार्थी की समस्या को समझने वाला
- 5- प्रजातान्त्रिक सोच वाला न कि अपनी बात घोपने वाला
- 6- विशेषज्ञ

शिक्षक एक अनुभवकर्ता (Teacher as a Monitor) =

साधारण अर्थ में अनुभवकर्ता वह व्यक्ति होगा, जो किसी कार्य की देख-रेख करते हुए तभी कार्य में आने वाली बाधाओं एवं कमियों को ध्यान में रखते हुए और दूर करते हुए कार्य को सुचारु रूप से चलने का काम करता है।

इस रूप में निश्चय ही शिक्षक एक अनुभवकर्ता है।

- 1- प्रतिपाष्टि कर्ता
- 2- निदान कर्ता
- 3- उपचार कर्ता
- 4- मार्ग निर्धारक
- 5- आकलन कर्ता
- 6- मूल्यांकन कर्ता
- 7- पहचान कर्ता
- 8- विशेषज्ञ
- 9- बच्चों की उन्नति पर नजर रखने वाला
- 10- सही सलाह देने वाला
- 11- कमियाँ दूर करने वाला



अभिप्रेरणा



उद्भव = अभिप्रेरणा शब्द अंग्रेजी भाषा के Motivation शब्द का हिन्दी रूपांतरण है, जो लैटिन भाषा के (Motum) मोटम शब्द से निकला है। जिसका अर्थ है चलायमान करना या गतिशील करना।

परिभाषाये =

गुड = किसी कार्य को आरम्भ करना जारी रखना और नियमित बना देना अभिप्रेरणा है।

चामसुन = अभिप्रेरणा हस्त में रुचि उत्पन्न करने की कला है।

विलियम मैकगाल = अभिप्रेरणा की व्याख्या मूल प्रवृत्तियों के रूप में की जा सकती है।

अभिप्रेरणा के तत्व

क्लार्क हल ने अभिप्रेरणा के चार तत्व बताये हैं।

→ आवश्यकता — भोजन

→ चालक/प्रणोद/अन्तर्नेदि — भूख

→ प्रोत्साहन/उत्तेजक — भोजन की प्राप्ति

→ सबलीकरण — भोजन पाना आसान बनाना

अभिप्रेरणा के सिद्धान्त :-

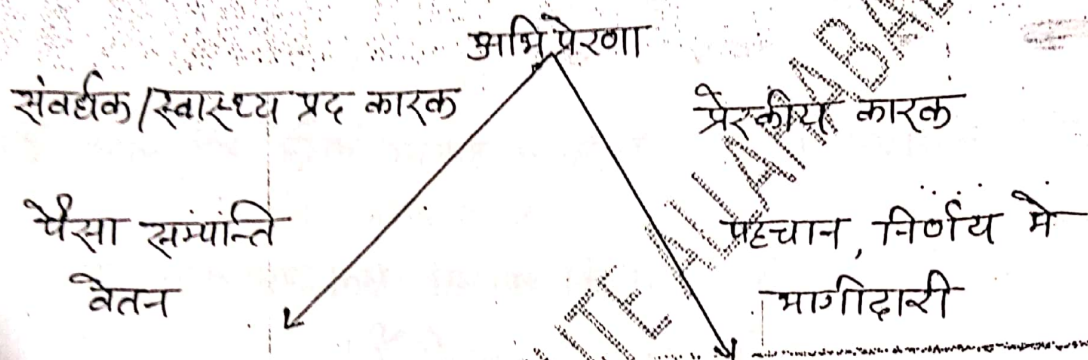
1- हाल्ले का आंतरिक प्रेरणा का सिद्धान्त :-

प्रयोग - बन्दरो पर

निष्कर्ष -

भले ही शुरुआत में कोई व्यक्ति लालच या पुरस्कार से काम करता लेकिन एक दिन खुद से या आंतरिक रूप से प्रेरित होकर काम करना ही उसकी आदत बन जाती है।

2- हर्जबर्ग का द्विकारक सिद्धान्त :-

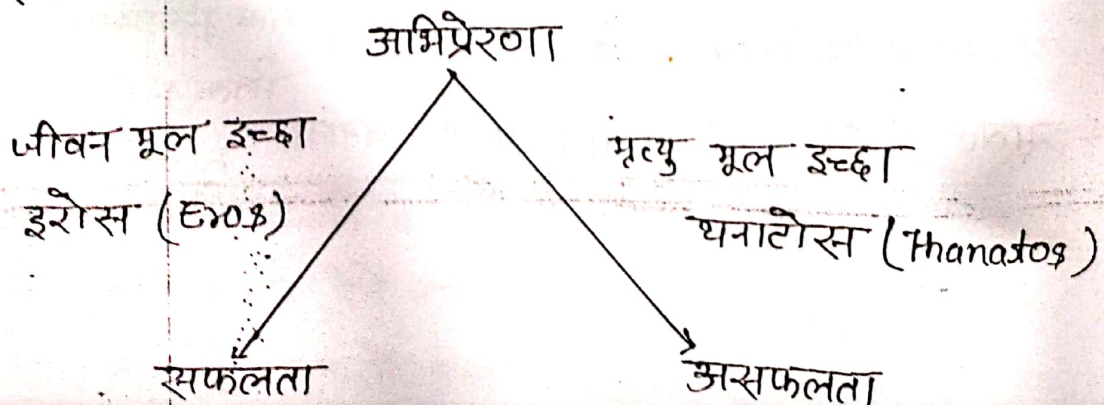


निष्कर्ष - जैसा हमें चिन्तामुक्त बनाता है, पर प्रेरित नहीं करता है। पहचान प्रेरित करती है।

Note - हर्जबर्ग ने यह सिद्धान्त अमेरिका के 200 इंजिनियर्स का अध्ययन करके दिया।

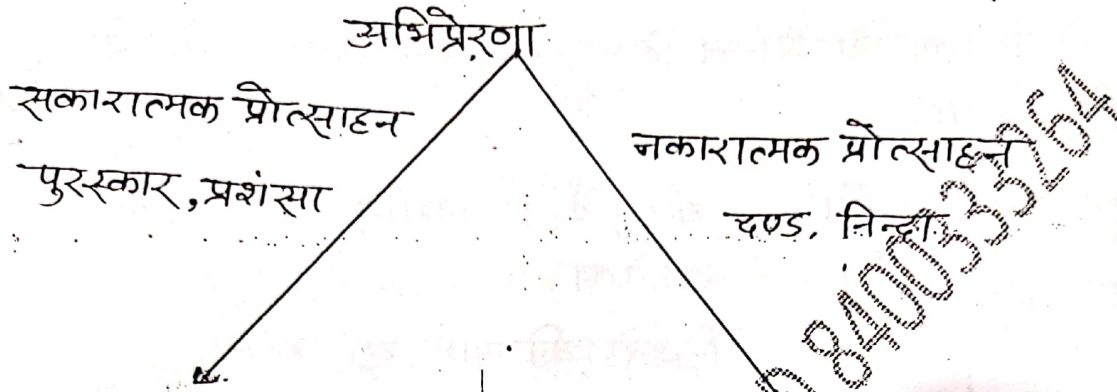
3- सिंगमंड फ्रायड का मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त :-

Impl



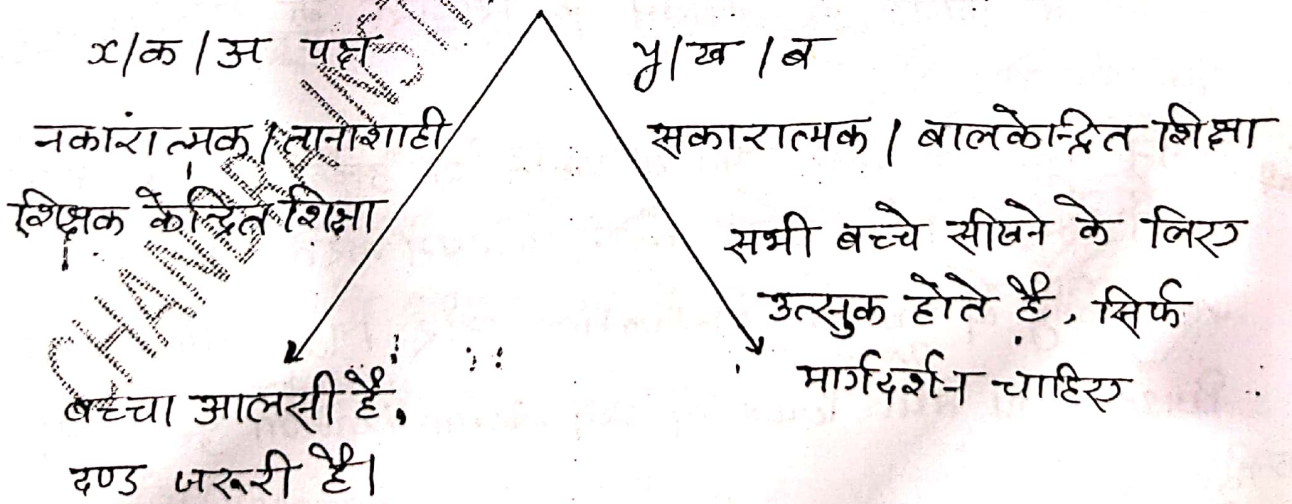
* सफलता जीवन की ओर तथा असफलता कुंठा से भरपूर मृत प्राणी के समान बना देती है।

4- वोल्स एवं कॉफेर्न का प्रोत्साहन सिद्धान्त =



* प्रशंसा या पुरस्कार वांछनीय व्यवहार को मजबूत बनाते हुए हम लक्ष्य की ओर ले जाते हैं जबकि दण्ड या निन्दा नकारात्मक पुनर्बलन बनें आवंछनीय व्यवहार को खत्म करते हैं।

5- डगलस मैक गेगर का x/y या क/ख/अ/ब सिद्धान्त =



Note-

यह सिद्धान्त अभिप्रेरणा के सकारात्मक एवं नकारात्मक या शिक्षक केन्द्रित एवं बाल केन्द्रित दृष्टिकोण को प्रस्तुत करता है।

6- मैक क्लीलैण्ड का त्रिमार्ग या आवश्यकता संप्राप्ति का सिद्धान्त :-

मैक क्लीलैण्ड ने कहा कि प्रत्येक मनुष्य उपकार की माँग या प्रेरको से प्रेरित होता है। वह या तो इन तीनों में से किसी एक से प्रेरित होगा, या एक साथ तीनों से प्रेरित होगा।

- संप्राप्ति माँग — धन, पैसा, जमीन
- सन्ता माँग — राजनेता
- संबंध — रिश्ते की माँग या महत्व

7- मैस्लो का पदानुक्रमित माँग का सिद्धान्त :-

- 1- अब्राहम मैस्लो अमेरिका के निवासी थे इन्हें मानवतावादी आन्दोलन के जनक माना जाता है।
- 2- उनका अभिप्रेरण का सिद्धांत मानवतावादी इसलिए कहलाता है कि वे फ्रायड के अचेतन के सिद्धान्त के घोर विरोधी थे।
- 3- ~~Imp~~ उन्होंने कहा कि सभी मनुष्य प्रकृति से अछे होते हैं, तथा अपनी सफलता के लिए कठोर परिश्रम करते हैं।
- 4- A Theory of human Motivation और Motivation and Personality तथा Power of Self Actualization पुस्तकें हैं।

मैस्लो का सिद्धान्त - (तर्क) =

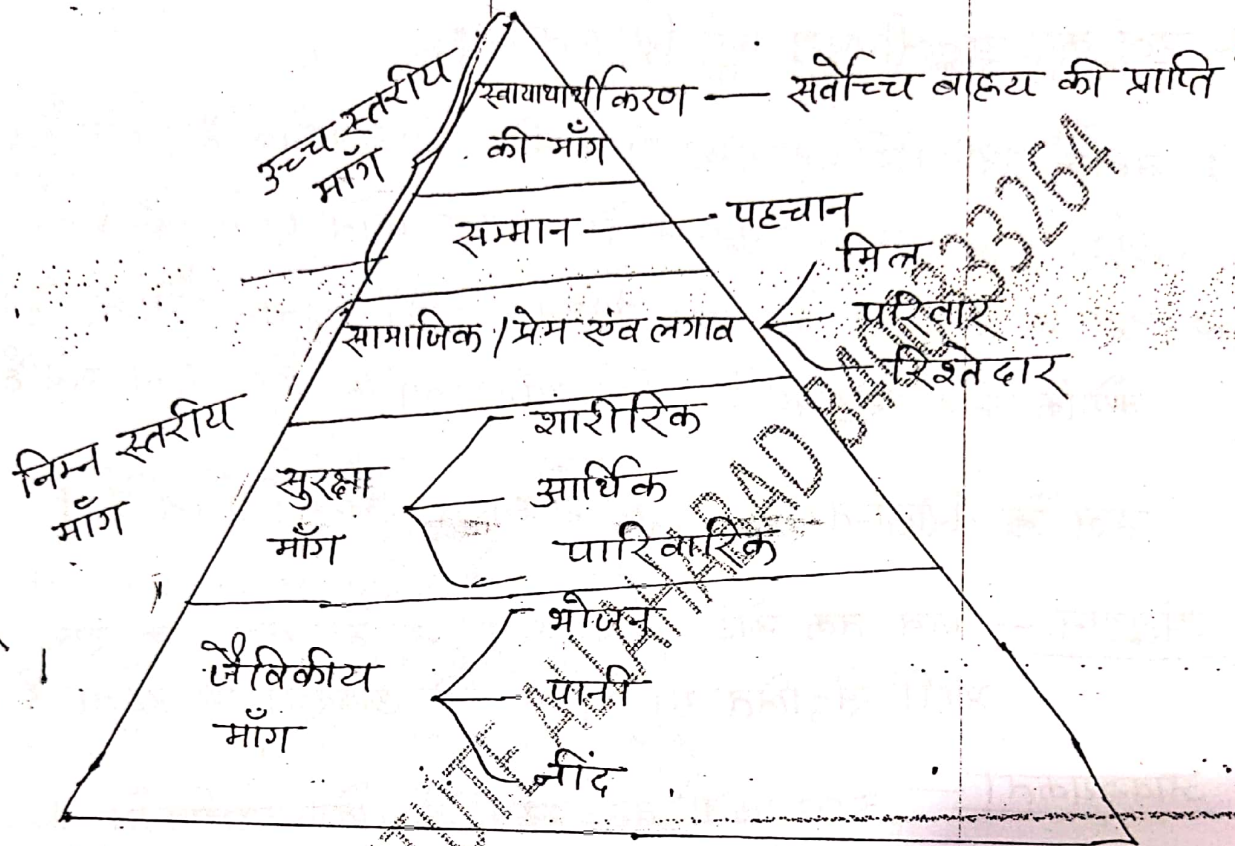
सिद्धान्त के नाम :-

- * पदानुक्रमित आवश्यकता का सिद्धान्त
- * माँग एवं आपूर्ति का सिद्धान्त
- * जाग्रतीय माँग का सिद्धान्त

* मानवतावादी सिद्धान्त

* आत्म सिद्धिकरण / स्वयंघाटीकरण का सिद्धान्त

मैस्लो का लिप्पुज



8- विक्टर ब्रूम का प्रत्याशा सिद्धान्त :-

1- विक्टर ब्रूम का यह सिद्धान्त 1964 में आया तथा यह उम्मीदों के अनुसार परिणाम आने पर ही व्यक्ति प्रेरित होगा, इसकी बात करता है, इसलिए इसे प्रत्याशा या *Expectancy* का सिद्धान्त कहते हैं-

कर्मण (Valance)	प्रत्याशा	योग्यता/निमित्त
क्या मैं लक्ष्य के लिए प्रयास की क्षमता रखता हूँ	क्या मेरे प्रयास लक्ष्य तक जा पायेगा	मुझे इस लक्ष्य पाने से क्या फायदा होगा

Note- किसी व्यक्ति का प्रेरित होना या न होना इस बात पर निर्भर करता है। कि - उसके प्रयास से प्राप्त किया गया लक्ष्य वांछनीय पुरस्कार - देता है या नहीं।

9- हल का सबलीकरण का सिद्धान्त =

- 1- क्लार्क लियोनार्ड हल एक अमेरिकी मनोवैज्ञानिक है। जो अपने सबलीकरण सिद्धान्त के लिए जाने जाते हैं।
- 2- हल के सिद्धान्त को एक विश्व स्तरीय पहचान मिली है। क्योंकि उनके सिद्धान्त से ही अभिप्रेरणा के तत्त्व लिये गये हैं।

हल के सिद्धान्त की प्रमुख अवधारणा निम्नलिखित हैं।

- 1- संतुलन - जब तक कोई आवश्यकता न हो तब तक एक प्राणी संतुलित या जड़त्व की अवस्था में रहता है।
- 2- आवश्यकता - आवश्यकता वह दशा है जो व्यक्ति में असंतुलन पैदा करती है। (भोजन)
- 3- चालक/प्रणोद - एक तनाव जो आवश्यकता से पैदा हुआ है और मनुष्य को दौड़ा देता है। (भ्रम)।
- 4- प्रोत्साहन - वह वस्तु जो आवश्यकता की संतुष्टि करता है। (भोजन की प्राप्ति)
- 5- सबलीकरण - जिस व्यवहार से मनुष्य की आवश्यकता पूर्ति होती है, वह उस व्यवहार को दोहराना चाहता है।

- आवश्यकता — पानी
- प्रणोद / चालक — प्यास
- प्रोत्साहन / उत्तेजक — पानी की प्राप्ति
- सबलीकरण — पानी प्राप्त करने का तरीका दोहराना या बेहतर करना

Note-

अपने सिद्धान्त के लिए हल ने 16 स्वयं सिद्ध प्रमेयों का प्रयोग किया।

हल के सिद्धान्त के कुछ नाम

- 1- आवश्यकता आकलन का सिद्धान्त
- 2- प्रणोद - न्यूनता का सिद्धान्त
- 3- संपोषण का सिद्धान्त
- 4- सबलीकरण का सिद्धान्त

हल की पुस्तकें

* The Principal of Behaviour

* The Essentials of Behaviour

अभिप्रेरकों के प्रकार

मैस्त्रो	घामसन	गैरिट
जन्मजात - भूख, प्यास	प्राकृतिक - भूख, प्यास	जैविक - भूख, प्यास
अर्जित - $\left\{ \begin{array}{l} \text{चैसा} \\ \text{सम्पत्ति} \end{array} \right.$	कृत्रिम - $\left\{ \begin{array}{l} \text{चैसा} \\ \text{सम्पत्ति} \end{array} \right.$	मनोवैज्ञानिक - सम्पत्ति सामाजिक - सम्मान प्रतिष्ठा

10 एल्डर्फर का ERN का सिद्धान्त =

यह सिद्धान्त एल्डर्फर द्वारा दिया गया है, तथा यह काफी दूर तक मैस्त्रो के पदानुक्रमित सिद्धान्त पर आधारित है। क्योंकि मैस्त्रो ने जिन माँगों को 5 प्रकार में रखा है, उन्ही माँगों को एल्डर्फर ने 3 प्रकार में रखा है।

* एल्डर्फर के अनुसार एक व्यक्ति तीन प्रकार की माँगों से प्रेरित हो सकता है।

→ आस्तित्ववादी माँग (Existence) - शरीर, कपड़ा, मकान

→ संबंध की माँग (Relationship) - सम्मान एवं रिश्ते की माँग

→ वृद्धि एवं विकास की माँग (Growth) - स्वविकास और खुद के सर्वोच्च बिन्दु को प्राप्त करना
(आत्मसिद्धिकरण मैस्त्रो का)

11- अभिप्रेरणा का शरीर रचना सिद्धान्त :- मॉर्गेन एवं मोरे

इस सिद्धान्त के अनुसार अभिप्रेरणा का स्रोत बाहरी वातावरण में मौजूद उद्दीपक नहीं है बल्कि हमारी शरीर ही है।
उदाहरण के लिए अगर भ्रूण एक प्रेरक है तो यह शरीर को महसूस होती है न कि उद्दीपक रूपी मौजूदगी को।

मॉर्गेन एवं मोरे का मानना था कि हमारे शरीर में अभिवाही गन्धिया संदेश भिजती है जो हमारे इन्द्रियो से पैदा होती है और प्रक्रिया होने के बाद इसका परिणाम अपवाही गन्धियों द्वारा भेजा जाता है।

बच्चे को कैसे प्रेरित करें :-

- * प्रोत्साहन द्वारा
- * रुचि जागकर
- * पूर्वज्ञान से जोड़कर
- * प्रशंसा शान्त करके
- * भ्रम दूर करके
- * प्रकटीकरण का
- * तत्परता आकर
- * जीवन्त उदाहरणों द्वारा
- * उचित शिक्षण विधि द्वारा
- * कहानी के प्रजातांत्रिक
- * वातावरण द्वारा



दण्ड एवं व्यवहार



दण्ड = किसी वांछनीय व्यवहार को रोकने का प्रावधान या व्यवस्था ही दण्ड है।

परिभाषा =

हरलॉक = अवांछनीय व्यवहार को दुखद साधन से जोड़ना ही दण्ड है।

दण्ड के सिद्धान्त =

दण्ड देने के 4 सिद्धान्त माने जाते हैं -

- 1- सुधारवात्मक सिद्धान्त - सुधार के लिए दण्ड
- 2- परिणाम बोधक सिद्धान्त - सम्भावित परिणाम का डर ही दण्ड है।
- 3- प्रतिशोधात्मक सिद्धान्त - अवांछनीय व्यवहार को रोकने के लिए दण्ड
- 4- प्रतिशोधात्मक सिद्धान्त - बदले की भावना से दण्ड (निषिद्ध)

दण्ड के प्रकार =

दण्ड के निम्नलिखित प्रकार हैं -

- 1- सामाजिक दण्ड = कक्षा में बच्चे को अकेले कोने में बैठाना।
- 2- आर्थिक दण्ड = देरी से लगातार आने पर विलम्ब शुल्क लगाना।
- 3- मानसिक दण्ड = किसी प्रश्न को सौ बार हल करवाना।
- 4- मनोवैज्ञानिक दण्ड = बिछाई से झगड़े के बाद माफी मागने पर भी शिक्षक का परीक्षा में अंक काट लेना।

5- शारीरिक दण्ड (निषिद्ध) :- मुर्गा बनाना, बेंच पर छड़ा करना, बैत से मारना।

6- वैधानिक या कानूनी दण्ड :- दण्ड के लिए कानून का सहारा

दण्ड देते समय ध्यान रखने योग्य बातें :-

- * दण्ड गलती के अनुसार हो।
- * दण्ड पक्षपात रहित हो।
- * एक अपराध के लिए सिर्फ एक बार दण्ड दे।
- * दण्ड देते समय गम्भीर मुद्रा में रहें।
- * हो सके तो शारीरिक दण्ड विद्यार्थी को न दे और दिव्यांग विद्यार्थियों को बिल्कुल भी शारीरिक दण्ड न दे।
- * दण्ड हमेशा बदले की भावना से रहित होकर दे।

दण्ड से लाभ :-

- * कक्षा में अनुशासन बनाने में सहायक
- * अवांछनीय व्यवहार को रोकने में सहायक
- * अन्य विद्यार्थियों के लिए एक सीख
- * दण्ड द्वारा कक्षा में अव्यवस्था की संभावना पर रोक

दण्ड से हानियाँ :-

- * दुश्मनी की सम्भावना
- * दण्ड पाकर भी अपराध का न रुकना

पुरस्कार

पुरस्कार किसी अच्छे या वांछनीय व्यवहार को बढ़ावा देने के लिए दिया गया प्रोत्साहन है।

परिभाषा -

शुलिकाबोध बैरट :: किसी वांछनीय व्यवहार को

सुबद सहाय्य से जोड़ना ही पुरस्कार है।

पुरस्कार के प्रकार ::

पुरस्कारों के निम्न लिखित विभाजन हो सकते हैं।

1- मूर्त या भौतिक पुरस्कार :: ऐसे पुरस्कार जो दिखायी दे सके, किताब, मेडल आदि।

2- अमूर्त या सामाजिक पुरस्कार :: ऐसे पुरस्कार दिखायी नहीं देते जैसे पदोन्नति, प्रशंसा या कसौन्नति

3- सांत्वना पुरस्कार :: इस प्रकार के पुरस्कार उपविजेता या किसी कक्षा के सभी विद्यार्थियों को दिये जा रहे हैं।

4- व्यक्तिगत पुरस्कार :: इस प्रकार के पुरस्कार किसी एक ही व्यक्ति को दिये जाते हैं-

जैसे- कक्षा में प्रथम स्थान पाने वाले विद्यार्थी को पुरस्कृत करना।

5- सामूहिक पुरस्कार :- इस प्रकार के पुरस्कार किसी समूह को दिये जाते हैं न कि किसी निजी व्यक्ति को।
जैसे- विजेता क्रिकेट टीम के विद्यार्थियों को पुरस्कृत करना।

। पुरस्कार देते समय ध्यान रखने योग्य बातें :-

- 1- हो सके तो बड़ी धनराशि पुरस्कार में न दे।
- 2- अमूर्त पुरस्कार देने का प्रयास करें।
- 3- निचली कक्षाओं में हो सके तो सभी विद्यार्थियों का सात्वना पुरस्कार दे।
- 4- पुरस्कार के रूप में सबसे ज्यादा प्रशंसा को अपनाये।
- 5- छोटी-2 बातों पर पुरस्कार न दे।
- 6- पुरस्कार में दैनिक जीवन या पढ़ने लिखने की वस्तुएं दे।
- 7- पुरस्कार का एक निष्पक्ष मानक बनाये।
- 8- हो सके तो पुरस्कार प्रदर्शन के तुरंत बाद दे।

पुरस्कार से लाभ :-

- 1- वांछनीय व्यवहार के लिए प्रोत्साहन
- 2- विद्यार्थियों में प्रेरणा का संचार
- 3- कक्षा के अन्य बच्चों के लिए बेहतर प्रदर्शन के लिए प्रेरक।
- 4- सम्पूर्ण कक्षा के प्रदर्शन में सुधार का संकल्प

पुरस्कार से हानियाँ :-

- 1- दुश्मनी या ईर्ष्या का विकास
- 2- पुरस्कार में पक्षपात
- 3- पुरस्कार पाने के लिए गलत संसाधनों का प्रयोग

Note-

Imp * पुरस्कार और दण्ड किसी भी प्रकार के पुनर्बर्लन नहीं हैं; ऐसा B.F. स्किनर मानते हैं।

* पुरस्कार और दण्ड खुद में किसी प्रकार के पुनर्बर्लन नहीं हैं। बल्कि इनमें व्यवहार का पुनर्बर्लन होता है।

चोर — चोरी — दण्ड = विद्यार्थी - अच्छा प्रदर्शन - व्यवहार पुरस्कार

व्यावसायिक आचरण एवं नीति

या

व्यावसायिक नैतिकता - Professional Ethics

प्रमुख बिन्दु :-

- 1- मानव जीवन का आधार व्यवसाय है।
- 2- व्यावसायिक नैतिकता पर चर्चा 1980-90 के दौर में शुरू हुई।
- 3- व्यावसायिक नैतिकता के दो प्रकार हैं, प्रमाणिक एवं वर्णनात्मक
- 4- CSR का पूर्ण रूप है, Corporate Social Responsibility तथा व्यवसाय जगत की नैतिक जिम्मेदारी
- 5- शिक्षा में सिर्फ वर्णनात्मक नैतिकता पायी जाती है।
- 6- मिल्टन फ्रीडमैन जिन्हें 1976 में अर्थशास्त्र के नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था वे एक मात्र ऐसे प्रसिद्ध विद्वान हैं जो व्यावसायिक नैतिकता के खिलाफ हैं।
- 7- भारतीय कॉपीराइट अधिनियम 1956-57 में आया।
- 8- पेटेंट किसी कम्पनी द्वारा बनाये गये उत्पाद या सेवा का मालिकाना हक रखने का अधिकार है।
- 9- ट्रेडमार्क एक व्यापार चिन्ह है जिसके द्वारा एक कम्पनी को बाजार में पहचाना जाता है।

- 10- हॉलमार्क सोने की शुद्ध मानक है, जबकि कैरेट उसकी शुद्धता का मानक है।
- 11- रणमार्क सोने के अलावा खाने-पीने की चीजों आदि का मानक है।
- 12- खाने व पीने वाले उत्पादों में एक छोटे से वर्ग में बनी हरी वृत्तीय आकृति आकाहारी जबकि जाल वृत्तीय आकृति मांसाहारी उत्पाद को दर्शाता है।
- 13- ब्राण्ड या गुडविल कोई मूल्य उत्पाद नहीं है अपितु एक कम्पनी द्वारा कई वर्षों में सतुष्ट ग्राहक पैदा करने की सेवाएँ का स्तर है।
- 14- आचार संहिता या कोड ऑफ कंडक्ट व्यवसाय जगत में या किसी व्यवसाय में किये जाने वाले व्यवहार का मानक निर्देश होता है।

व्यावसायिक नैतिकता के तत्व

- 1- ईमानदारी
- 2- धारदारिता
- 3- अबाधदेही
- 4- कचनपालन
- 5- समयपालन
- 6- मानवता
- 7- सत्य आचरण
- 8- अहिंसा
- 9- अस्तेय
- 10- कर्तव्यपरायणता

- 11- वफादारी
- 12- दया
- 13- सहानुभूति
- 14- समानुभूति
- 15- भाईचारा
- 16- बाल-श्रम का विरोध
- 17- प्रदूषण नियन्त्रण
- 18- घैिन शोषण पर रोक
- 19- आकस्मिक दुर्घटना की हतिपूर्ति
- 20- आन्तरिक व्यापार न करना

परिभाषा :- व्यापार जगत में क्या सही है और क्या गलत है
तथा किसी पक्ष को बिना नुकसान पहुंचाये क्या किया
जा सकता है इस आचरण या सोच को ही व्यावसायिक
नैतिकता कहते हैं।

CHITRA KUMAR HARAD 8840333264

प्रश्नोत्तर

- 1- फ्रायड के अभिप्रेरणा के सिद्धान्त में जीवन इच्छा एवं मृत्यु इच्छा को क्या कहा गया है - इरोस एवं थनाटोस
- 2- Motivation and Personality पुस्तक - मैस्लो
- 3- विश्व स्वास्थ्य संगठन ने कितने जीवन कौशल बताये हैं - 10
- 4- व्यावसायिक नैतिकता के कितने प्रकार - 2
- 5- दण्ड का कौन-सा सि० वर्जित - प्रतिशोधात्मक दण्ड
- 6- प्रत्याशा का अभिप्रेरणा का सि० - विक्टर ब्रूम
- 7- हर्जबर्ग के प्रेरणा के द्विकारक सि० में प्रेरकीय कारक में क्या आता है - पहचान, निर्णय, भागीदारी
- 8- सबसे बड़ा पुरस्कार किसे माना गया है - प्रशंसा
- 9- अभिप्रेरणा के क/ख सि० में आल्बस मैक ग्रेगर ने किस पक्ष को नेकारात्मक प्रेरणा माना है -
- 10- अभिप्रेरणा के आन्तरिक प्रेरणा के सि० - हार्लो
- 11- अभिप्रेरणा छात्र में रुचि उत्पन्न करने की कला है यह कथन - धामसन
- 12- प्रणोद - न्यूनता का सि० किसने दिया - टेल
- 13- अभिप्रेरणा का प्रोत्साहन का सि० - बोल्स एवं कार्पेन
- 14- व्यावसायिक नैतिकता का मुद्दा कब - 1980-90
- 15- अभिप्रेरणा शब्द की उत्पत्ति किस भाषा - लैटिन भाषा (propellere शब्द से)
- 16- अभिप्रेरणा का ERG सि० किसकी देन - एल्डर

- 17- "जीवन कौशल विकासालोक एवं सकारालोक क्षमताएँ हैं जो एक व्यक्ति को उसके जीवन की चुनौतियों और माँगों से निपटने में सहायता करती हैं" यह कथन - W.H.O
- 18- लैट आने पर एक बच्चे पर विद्यालय द्वारा विलम्ब शुल्क लगाना किस प्रकार का दण्ड है - आर्थिक दण्ड
- 19- किताब या पेन पुरस्कार किस प्रकार के आर्थिक पुरस्कार हैं - भौतिक पुरस्कार
- 20- मैस्लो के सिद्धान्त में सर्वोच्च माँग कौन-सी - स्वयं-वर्धन
- 21- मैक क्लेर्लेण्ड ने अपने सि० में कितने प्रकार के प्रेरक बताये हैं - सत्ता, संबंध, उपलब्धि
- 22- "अभिप्रेरणा की व्याख्या जन-मज्जात मूलप्रवृत्तियों के रूप में की जा सकती है।" यह परिभाषा - मैकडूगल
- 23- गुडविल क्या होती है - कम्पनी के संतुष्ट ग्राहकों द्वारा प्राप्त संतुष्टि ही गुडविल है।
- 24- "मूल्य वह है जो मानव इच्छाओं की पूर्ति करे" यह परिभाषा - अर्बन

सांख्यिक एवं मानवीय मूल्य

प्रमुख बिन्दु - i) मूल्य शब्द Value का हिन्दी समकक्ष/समानार्थी है, जो लैटिन भाषा Vapula शब्द से (वलेर) निकला जिसका अर्थ है, महत्व या उपयोगिता।

- 2) मानवीय मूल्यों को सबसे पहले 1986 की नीति में महत्व दिया गया।
- 3) NCERT ने कुल 93 मूल्य माने हैं।
- 4) भारतीय दर्शन के अनुसार 4 मूल्य माने गये हैं।
अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष जिसे पहले तीन सांसारिक जबकि चौथा या मोक्ष पारलौकिक मूल्य कहलता है।
- 5) व्याक्तित्व का मूल्य आधारित वर्गीकरण सबसे पहले स्पेन्जर ने प्रस्तुत किया था जिसमें उन्होंने 6 मूल्यों पर आधारित व्याक्तित्व बताया है।

- i) राजनीतिक मूल्य - शक्ति
- ii) सामाजिक मूल्य - समाजसेवी
- iii) आर्थिक मूल्य - बिजनेसमैन
- iv) कलात्मक मूल्य - कवि, चित्रकार
- v) धार्मिक मूल्य - साधू, सन्त, फकीर, पादरी
- vi) सैद्धांतिक मूल्य - आदर्शवादी

6) NCERT ने 4 क्षेत्रीय मूल्य माने हैं।

- i) सम
- ii) सफाई एवं सत्ता
- iii) समानता एवं सहयोग
- iv) अन्धत्व एवं भाईचारा

मूल्य - प्रमुख परिभाषाएँ

1. अर्थन ⇒ मूल्य वह है जो मानव इच्छाओं की तृप्ति करे।
2. पारसन्स ⇒ मूल्य किसी सामाजिक व्यवस्था में कई अनुस्थापनों में से किसी एक अनुस्थापन का चयन है।
3. बुद्धिकर ⇒ शिक्षा उद्देश्यों को व्यक्त करना बौद्धिक मूल्य कहलाता है।
4. जोसेफ फिचर ⇒ मूल्य वे मानदण्ड हैं जो किसी सभ्यता या संस्कृति को सार्थकता प्रदान करते हैं।
5. वार्डी ⇒ उपयुक्ता या चुने जाने का गुण ही मूल्य है।
6. इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका ⇒ जो जीवन को आस्तित्व एवं गति प्रदान करे वही मूल्य है।

Note ⇒ भारतीय परम्परा में मूल्यों को पुरुषार्थ कहा गया है।

संविधानिक मूल्य ⇒ दुनिया का प्रत्येक संविधान कुछ आदर्शों एवं सिद्धान्तों पर टिका होता है इसे ही संविधानिक मूल्य कहते हैं।

जैसे-

1. सम्प्रभुता
2. धर्म निरपेक्षता
3. अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता
4. राष्ट्रीय एकता
5. अस्पृश्यता का अंत
6. बहुत्व
7. सम्राजवाद
8. सहिष्णुता
9. प्रजातन्त्र
10. न्याय

मानवीय मूल्य

आस्तेय
अहिंसा
सत्य
ईमानदारी
पारदर्शिता
जवाबदेही
निन्दा
हिंसा

वचन बद्धता
समय पालन
मानवता
परिपक्वता
सहानुभूति
प्रेम
धैर्य
अपरिग्रह
विनम्रता

समानुभूति

मूल्यों के स्रोत

माता-पिता
विद्यालय
समाज
धर्म
व्यवसाय

Note 3 मूल्य समाजीकरण द्वारा सीखा जाता है।

मूल्य ह्रास के कारण

- 1- लोगों में बढ़ता अकेलापन
- 2- एकल परिवार
- 3- बचपन से ही बाल्यावस्था में कुछ हद तक सोशल नेटवर्क का नकारात्मक प्रभाव
- 4 - युवा वर्ग की बदलती जीवन शैली
- 5 - समाज में फैलती मादक पदार्थों के सेवन के प्रति लत

मूल्यों की विशेषताएँ

(14)

- 1- मूल्य सार्वभौमिक होते हैं।
- 2- मूल्य अलग-2 परिस्थितियों में अलग होते हैं।
- 3- मूल्य हमारे मार्गदर्शक होते हैं।
- 4- मूल्य समाज द्वारा निर्मित हैं इनका कोई भूत भास्तिव नहीं है।
- 5- मूल्य एक आदर्श अवस्था हैं जिसे कभी भी पूर्णतया से प्राप्त नहीं किया जा सकता है।